No. of Printed Pages : 2

एम.एच.डी.-1

03233

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2012

एम.एच.डी.-1 : हिन्दी काव्य-1

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल **चार** प्रश्नों के उत्तर देने हैं। प्रथम प्रश्न **अनिवार्य** है। शेष में से **किन्हीं तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित में से ***किन्हीं दो*** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **10x2=20**

(क) मोकों कहाँ ढूढ़े बन्दे मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहों, पल भर की तालास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।।

(ख) खरभरू देखि बिकल पुर नारीं। सब मिलि देहिं महीपन्ह गारीं।।
तेहिं अवसर सुनि सिव धनु भंगा। आयउ भृगुकुल कमल पतंगा।।
देखि महीप सकल सकुचाने। बाज झपट जनु लवा लुकाने।।
गौरि सरीर भूति भल भ्राजा। भाल बिसाल त्रिपुंड बिराजा।।
सीस जटा ससिबदनु सुहावा। रिसबस कछुक अरुन होइ आवा।।
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते। सहजहुँ चितवत मनहुँ रिसाते।।
बृषभ कंध उर बाहु बिसाला। चारू जनेउ माल मृगछाला।।
कटि मुनिबसन तून दुइ बाँधे। धनु सर कर कुठारू कल काँधे।।

(ग) म्हाँ गिरधर आगाँ, आगाँ नाच्यारी।।
णाच णाच म्हाँ रसिक रिझावाँ प्रीत पुरातन जाँच्या री।
स्याम प्रीत री बाँद घुँघर्याँ मोहण म्हारो साँच्यारी।
लोक लाज कुलरा मरजादाँ जगमां णेक णा राख्यौरी।
प्रीतम पल छण णा बिरारावाँ मीरा हरि रँग राच्याँरी।।

(घ) झलकै अति सुन्दर आनन गौर छके दृग राजत काननि छवै।
हँसि बोलन मैं छबि फूलन की बरषा, उर ऊपर जाति है ह्वै।
लट लोल कपोल कलोल करै, कल-कंठ बनी जलजावलि द्वै।
अंग अंग तरंग उठै दुति की, परिहे मनौ रूप अबै धर च्वै।।

2. विद्यापति की काव्य-भाषा पर विचार कीजिए। 10

3. कबीर की वैचारिकता को विश्लेषित कीजिए। 10

4. पद्मावत में निहित लोकजीवन को उद्घाटित कीजिए। 10

5. भक्ति आंदोलन के सन्दर्भ में सूरदास के महत्व को प्रतिपादित कीजिए। 10

6. मीरा की कविता में अभिव्यक्त प्रेमानुभूति और प्रेम विह्वलता को चित्रित कीजिए। 10

7. मर्मस्पर्शी जीवन प्रसंगों के चित्रण के सन्दर्भ में तुलसीदास का मूल्यांकन कीजिए। 10

8. पदमाकर के शृंगार वर्णन संबंधी विशेषताओं को रेखांकित कीजिए। 10